पवित्र गंगा

लेखक और चित्र : टेड, हिंदी: विदूषक

BENARES

गंगा स्वर्ग से गिरी. इतनी ऊंचाई से गिरने के बाद भी वो इसलिए बची क्योंकि उसे भगवान शिव ने अपनी जटाओं में उलझा लिया.....

पवित्र गंगा

लेखक और चित्र : टेड, हिंदी : विदूषक

भारत में एक शहर है – बनारस. वो दो अन्य नामों से भी जाना जाता है – वाराणसी और काशी. काशी का मतलब है "जो दिव्य प्रकाश से जगमगाता हो." बनारस दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक है. जब 500 (ईसा पूर्वी) में भगवान बुद्ध बनारस पधारे तभी वो एक प्राचीन नगरी थी. बनारस में बहती है गंगा नदी. गंगा का उद्गम हिमालय – दुनिया की सर्वोच्च पहाड़ियों में हैं. गंगा, हिमालय से निकलकर बंगाल की खाड़ी में जाकर मिलती है.

हिन्दुओं के लिए सभी नदियाँ पवित्र और पूज्यनीय हैं. नदियों में गंगा सबसे पवित्र मानी गई है और उसके एक सौ आठ पवित्र नाम हैं. ऐसा माना जाता है कि गंगा के पानी में मोक्ष की शक्ति है.

किसी भी हिन्दू का सबसे बड़ा लक्ष्य बनारस की तीर्थ यात्रा करना होता है. उससे लोगों की समस्याओं का निदान होता है और उन्हें रोज़मर्रा की परेशानियों से शांति और चैन मिलता है. हर साल लाखों लोग गंगा के पवित्र जल में डुबकी लगाकर अपनी आत्मा को शुद्ध करते हैं. सदियों से लोगों ने ऐसा ही किया है.

गंगा के एक-मील चौड़े पाठ के ऊपर जीवनदायी सूर्य उगने से नया दिन शुरू होता है. बूढ़ा मांझी अपनी नाव को, घाट पर बनी पत्थरों की काली सीढ़ियों से दूर खेकर ले जाता है.

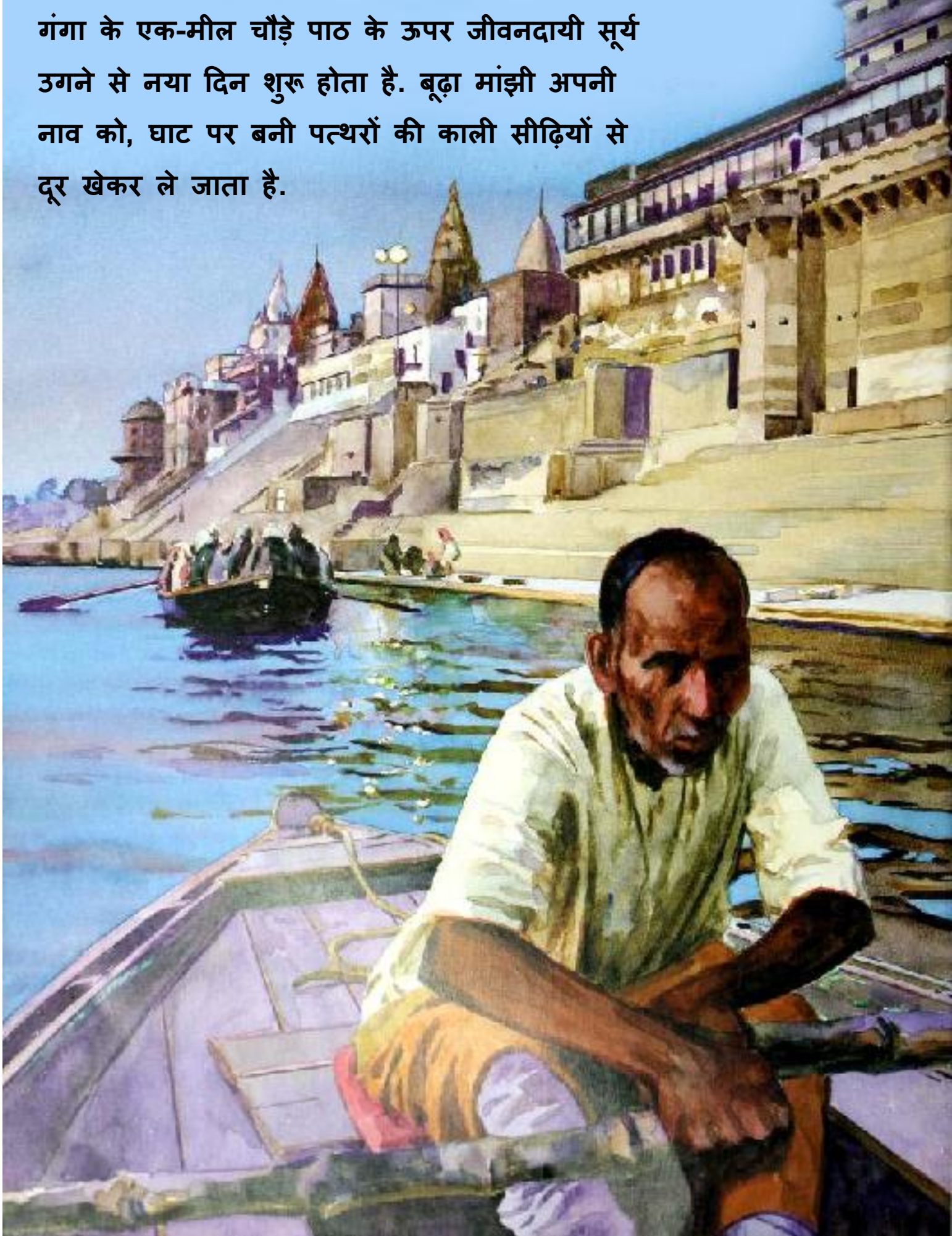

घाट के पास सैकड़ों नावें खड़ी हैं.

नावों के मस्तूल ऊपर आसमान की ओर तैनात हैं.

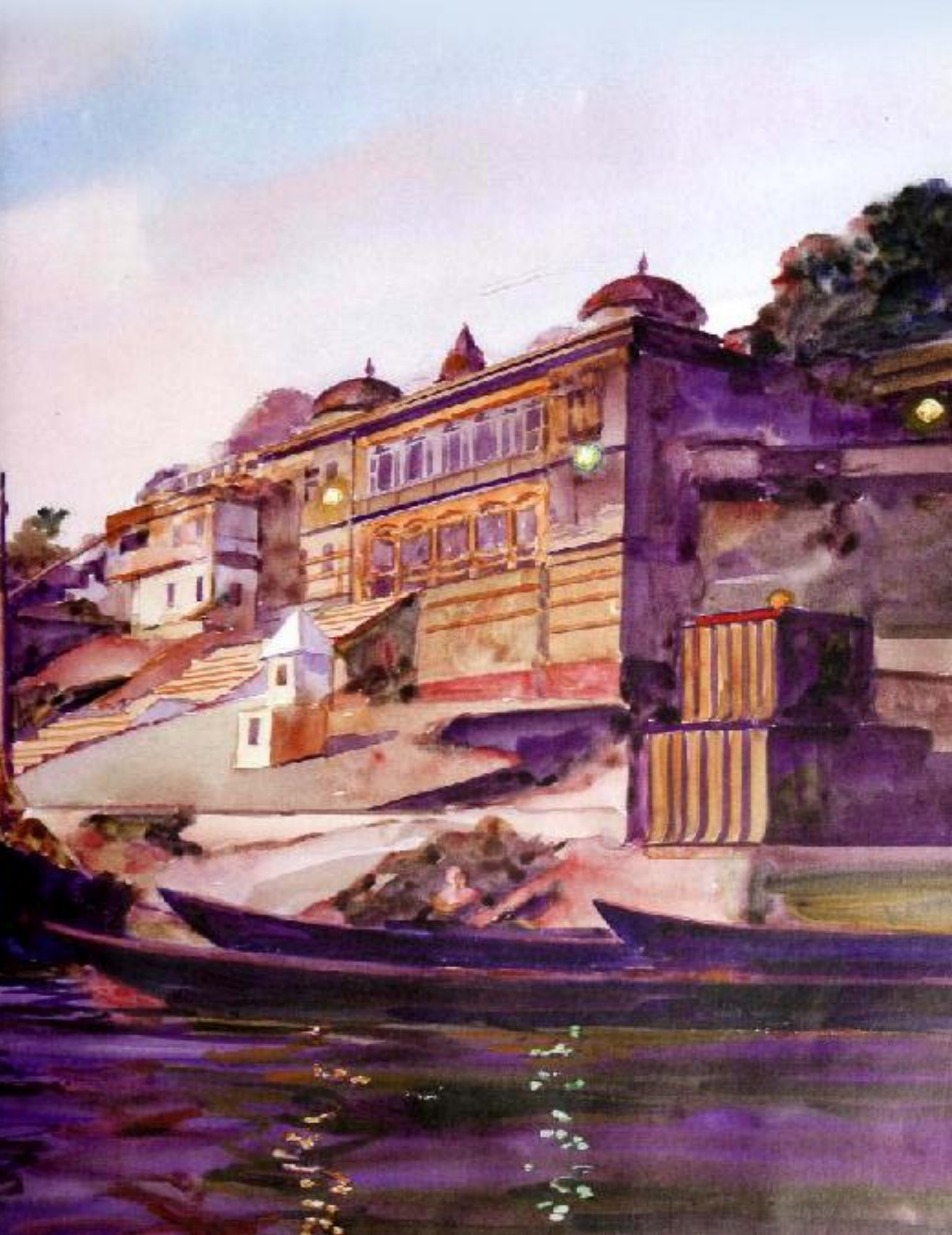

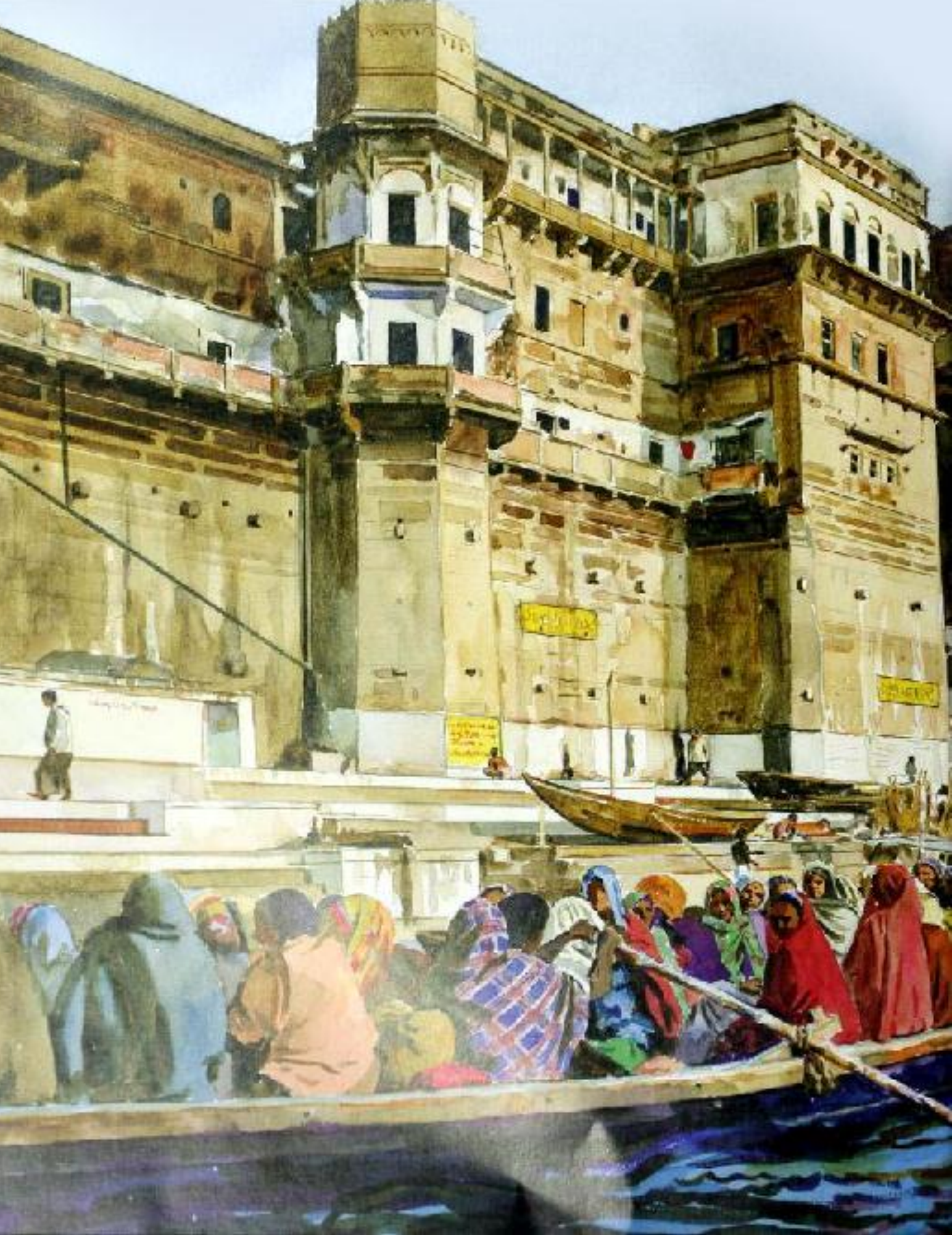

श्रद्धालू पल्लू से अपने सिरों को ढंककर
लम्बी नावों में, नदी की यात्रा कर रहे हैं.

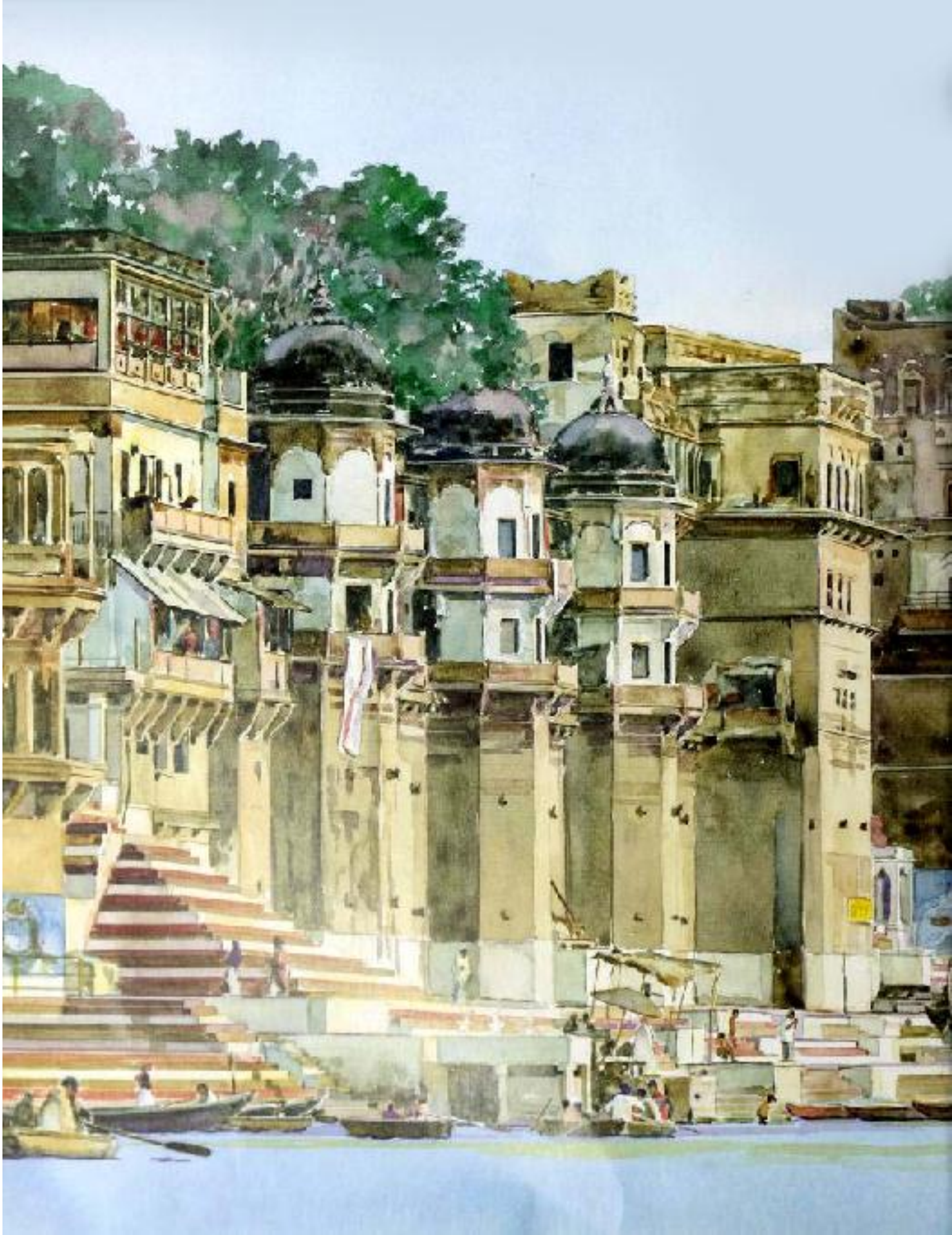

सुबह की धूप महाराजा के महल की पुरानी दीवारों पर धीरे-धीरे करके ऊपर चढ़ रही है. पिछली बार बारिश में जब बाढ़ आई तो उसके ऊंचे स्तर पर एक निशान लगाया गया था. धूप अब उस निशान के भी ऊपर चली गई है.

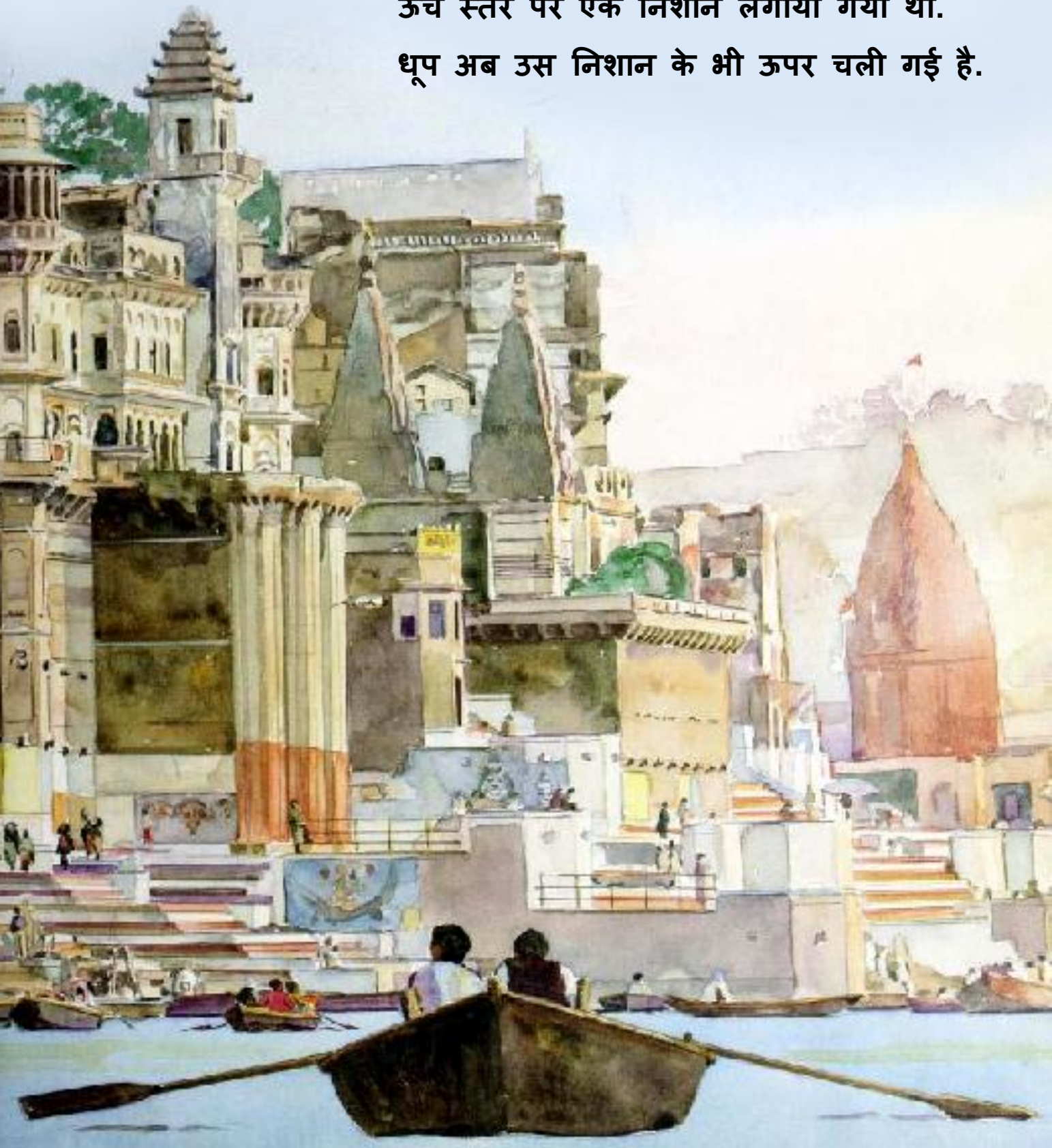

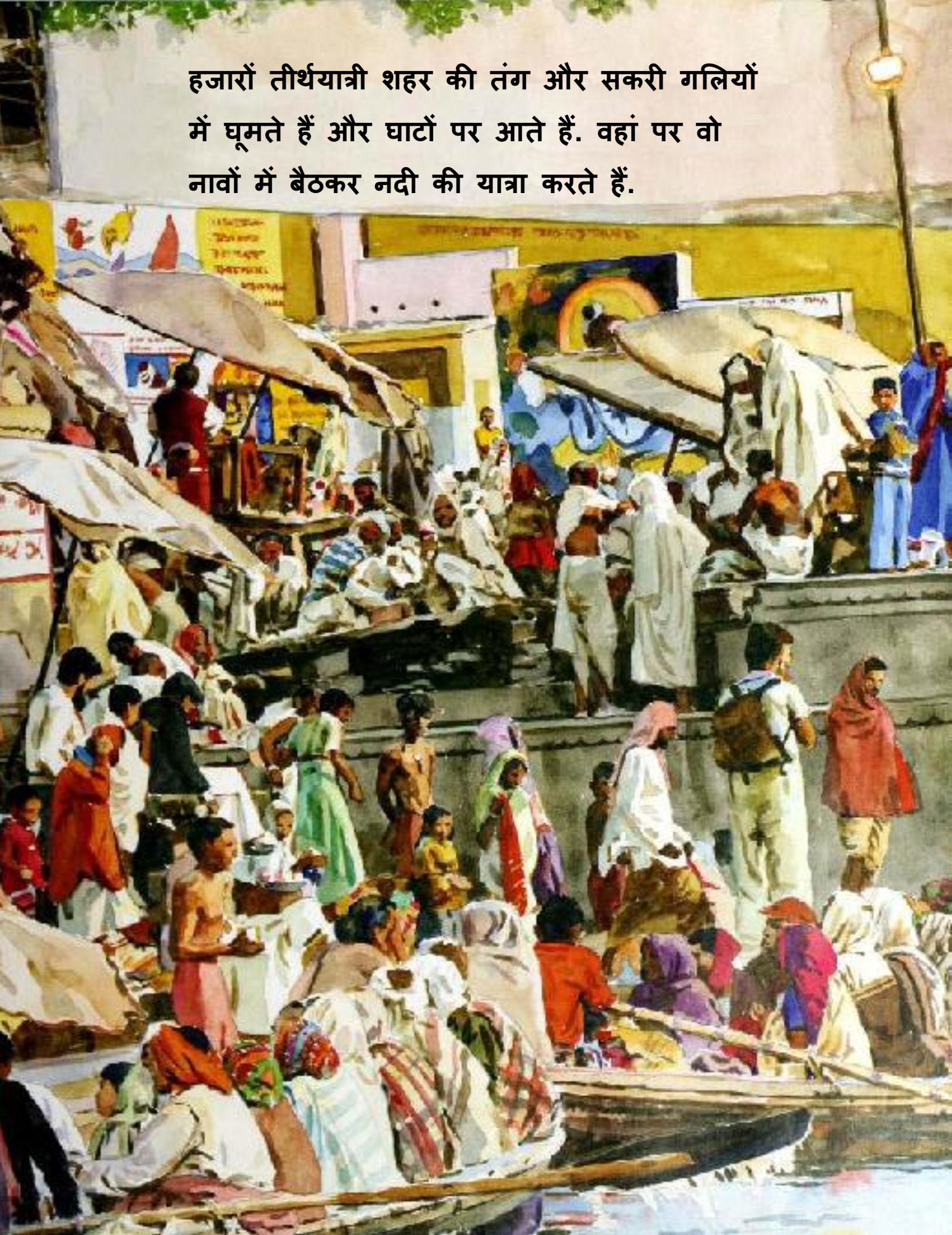

हजारों तीर्थयात्री शहर की तंग और सकरी गलियों में घूमते हैं और घाटों पर आते हैं. वहां पर वो नावों में बैठकर नदी की यात्रा करते हैं.

जैसे ही सूरज उगता है वैसे ही श्रद्धालु नदी में उतरते हैं
और उसके पवित्र पानी से खुद को साफ़ करते हैं.

वो चमेली के फूलों की भेंट चढ़ाते हैं.

साधु-संत माथे पर तिलक और विभूति लगाए घाट पर बड़ी-बड़ी छतरियों के नीचे बैठकर प्रार्थना करते हैं.

लोगों के रंग-बिरंगे कपड़ों से, घाट की सीढ़ियाँ
एक फूलों की बगिया नज़र आती है.

घाट पर लगी बड़ी-बड़ी छतरियां, कुकुरमुत्तों के झुरमुटे जैसी दिखती हैं. उनके पीछे आप ऊंची-ऊंची मीनारें, गुम्बदें और उनके पीछे अम्बर और जयपुर के महाराजों के महल देख सकते हैं.

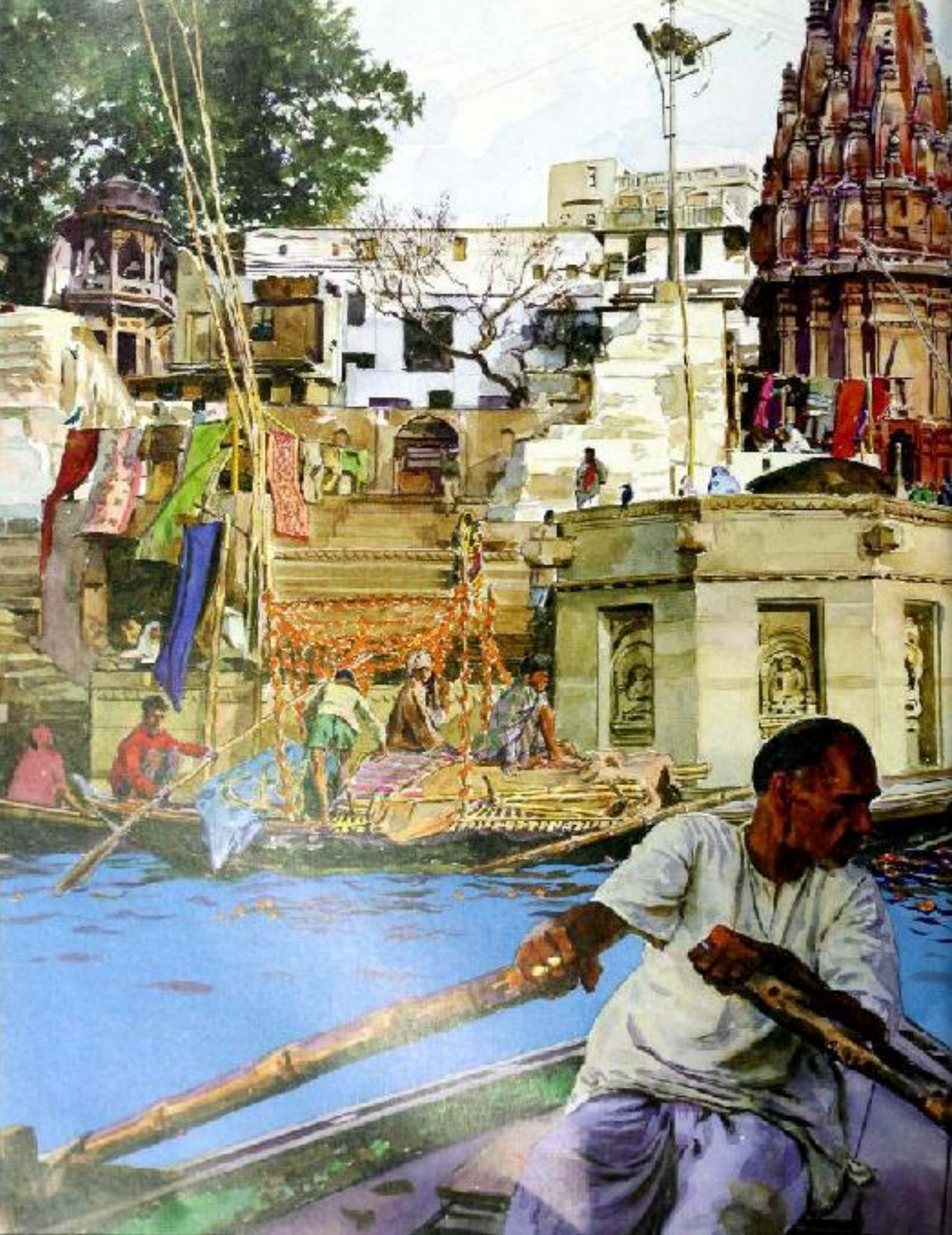

बूढ़ा मांझी अपनी नाव को घाट पर लगाता है.
उसके चप्पू अपने खूंटों में चरमराते हैं. नावें एक दूसरे से सटकर लगी हैं और तीर्थयात्रियों से ऊपर तक खचाखच भरी हैं. नावें भी चमेली के फूलों से सजी हैं.

औरतें के पैरों में लाल मेहँदी लगी है. वे नदी में
बाहर आकर रंग-बिरंगी साड़ियाँ पहनती हैं.
ऊपर काले कव्वे कांव-कांव का शोर मचाते हैं.

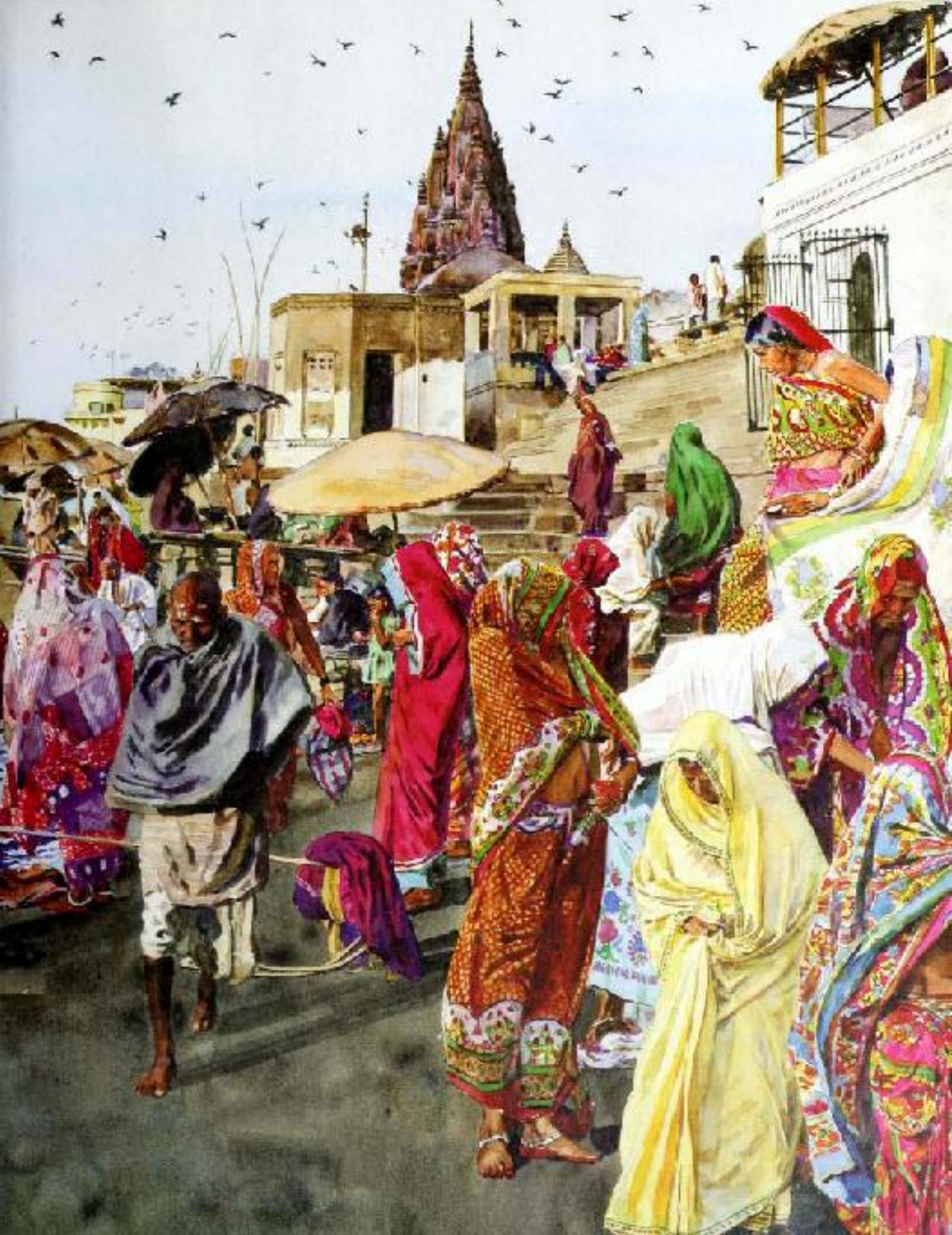

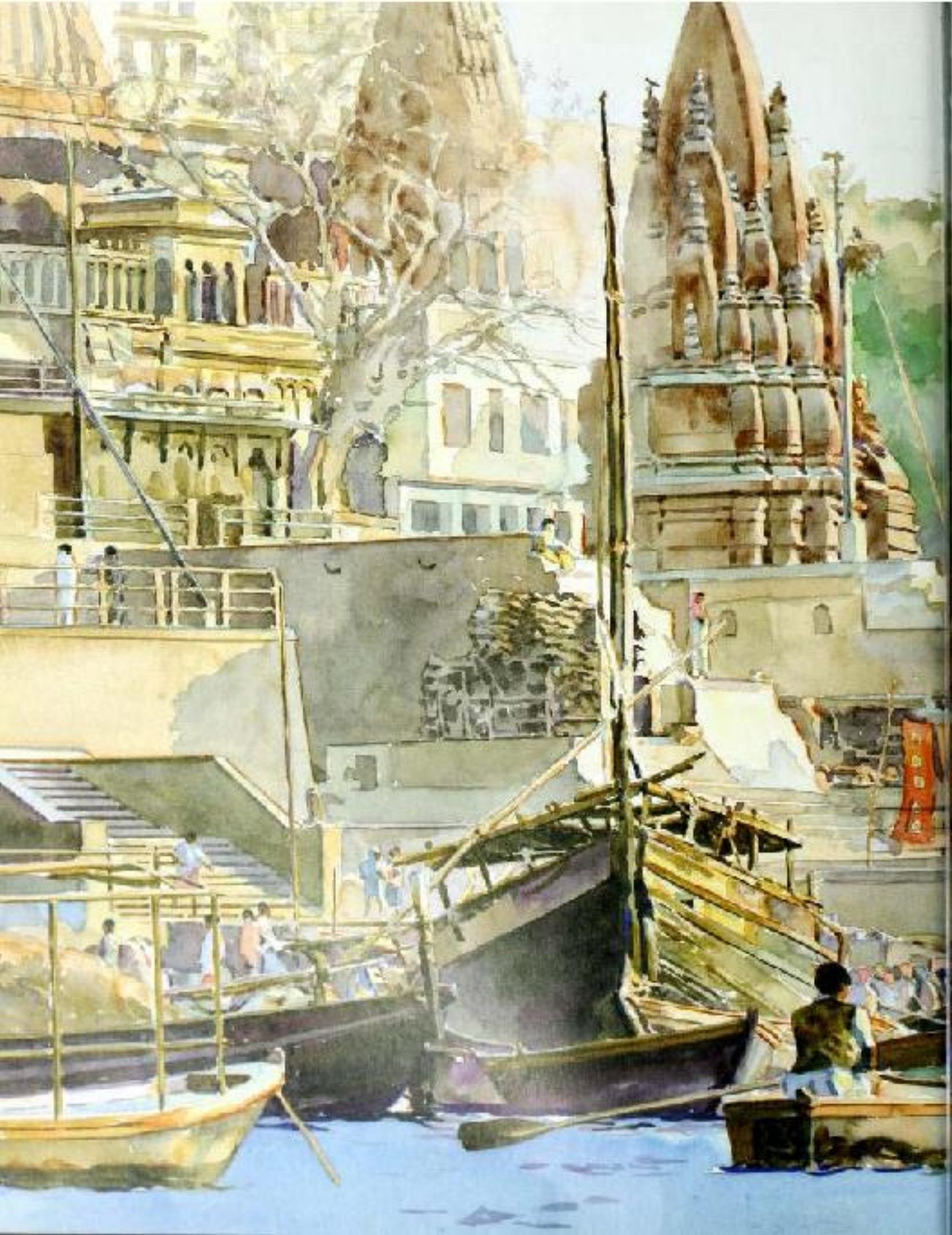

आधी डूबी मंदिर की मीनार के पास से धुआं उठ रहा है और आसपास के घाटों पर राख बिछी है. यह वो शमशान घाट जहाँ मृतकों का अंतिम संस्कार किया जाता है. जब किसी हिन्दू का देहांत होता है तब उसके मृत शरीर को जलाया जाता है और बची राख को नदी में बहाया जाता है.

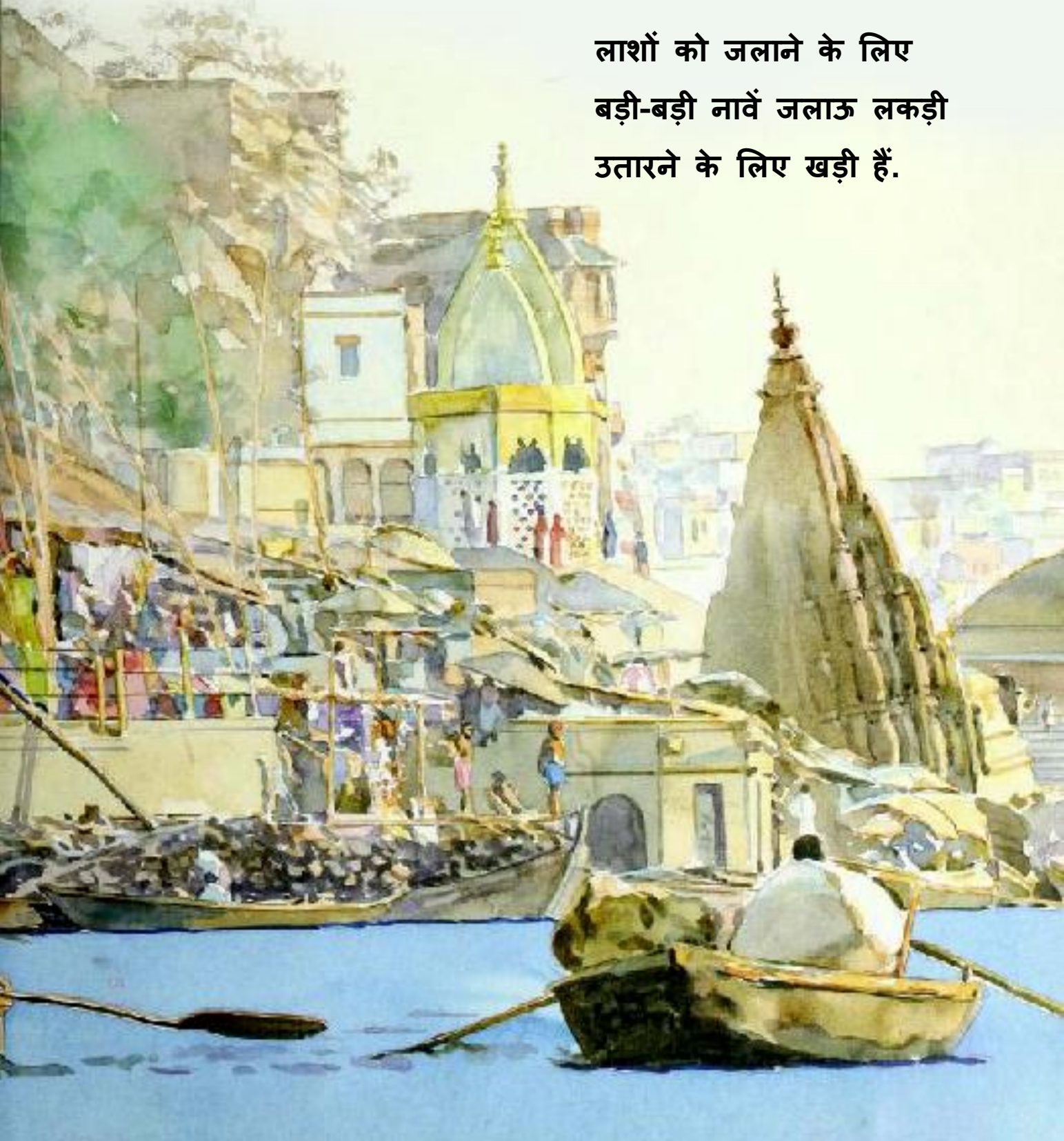

लाशों को जलाने के लिए
बड़ी-बड़ी नावें जलाऊ लकड़ी
उतारने के लिए खड़ी हैं.

मृत आत्माओं की आगे की यात्रा यहाँ से ज़ारी रहेगी. उनकी राख चमेली के फूलों के साथ मिलकर नदी के साथ बहती हुई समुद्र की लम्बी यात्रा करेगी.

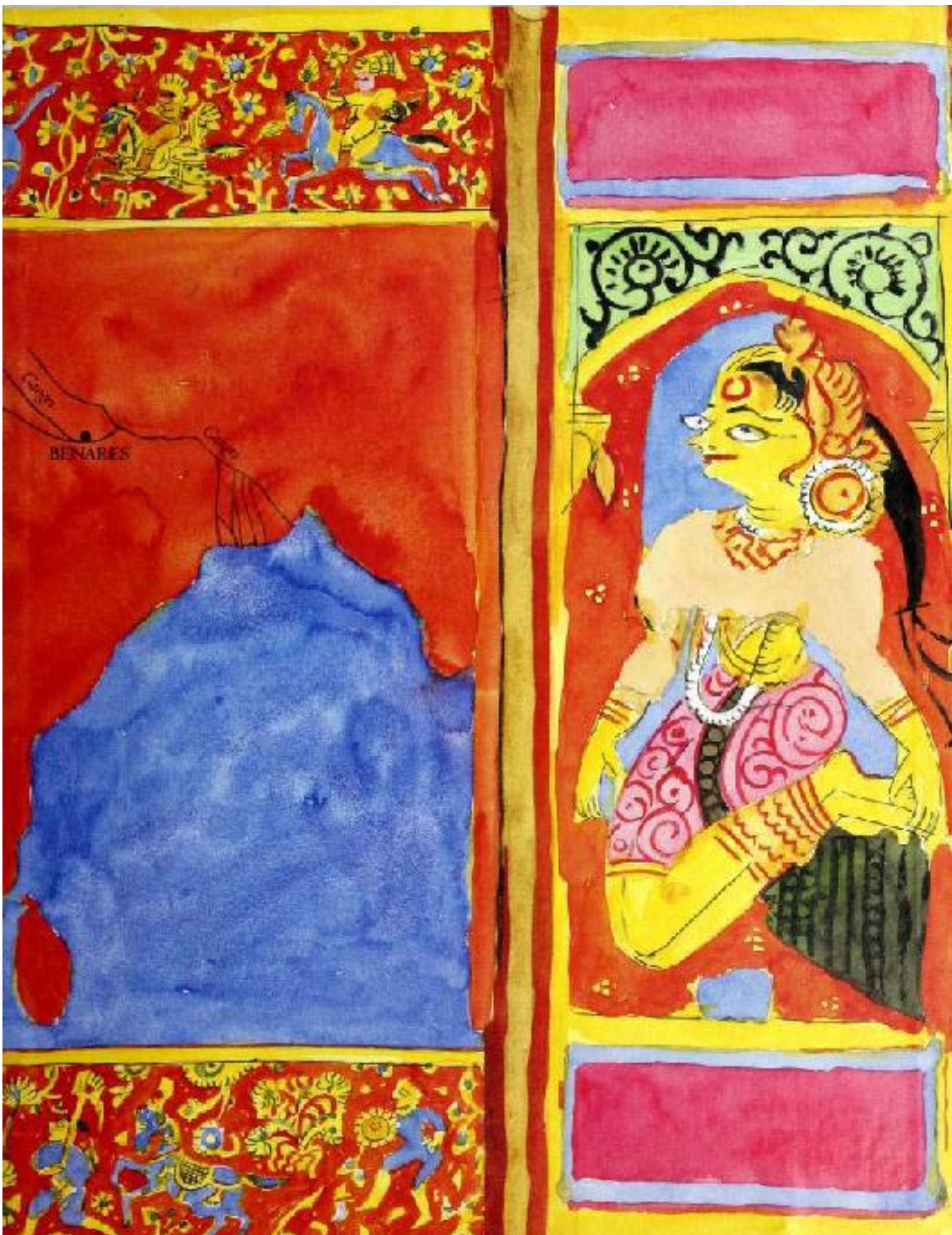
BENARES